Methods of developmental Psychology

प्रत्येक विषय की अपनी विषय वस्तु तथा विशिष्ट अध्ययन विधियाँ होती हैं। विकासात्मक मनोविज्ञान की विषय-वस्तु, सिद्धांतों और अध्ययन विधियों पर मनोविज्ञान के विकास का काफी प्रभाव पड़ा है। आधुनिक मनोविज्ञान के विकास के साथ विकासात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापकता और विभिन्नता आयी है। इन विधियों के द्वारा मानव विकास से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं। विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान की सभी विधियों का प्रयोग संभव नहीं है। क्योंकि बच्चों के विकास तथा मानव-विकास की विभिन्न अवस्थाओं में सभी विधियों का उपयोग नहीं किया जा सकता। मानव विकास की विभिन्न ~~अवस्था~~ अवस्थाओं जैसे- prenantal stage (गर्भकालीन) एवं शैशवावस्था में दैहिक विकास के अध्ययन के लिए observation (निरीक्षण विधि) method उपयोगी होती है। per-childhood (पूर्व बाल्यावस्था) के विकास के अध्ययन में प्रत्यक्ष निरीक्षण-विधि का उपयोग प्रदत्त संग्रह के लिए किया जाता है। जबकि late childhood (उत्तर बाल्यावस्था), adalescence, एवं adulthood (प्रौढ़ावस्था) के विकासात्मक प्रदत्तों की जानकारी के लिए method of correlation, tests, questionair (प्रश्नावली) एवं interview विधि का उपयोग लाभकारी होता है। मानव-विकास की विभिन्न अवस्थाओं में adjustmental समस्याओं के अध्ययन में चरित्र इतिहास विधि एवं mental tests का उपयोग किया जाता है। आजकल के समय में विकासात्मक मनोविज्ञान में निम्न विधियाँ प्रयुक्त हो रही हैं।

Observation method

Nature

निरीक्षण विधि सभी विज्ञानों की प्राचीनतम विधि है। व्यवहारवाद की स्थापना के साथ मनोवैज्ञानिक watson, (जे॰बी॰ वाटसन, 1913) ने मनोविज्ञान की विधि के रूप में अन्तर्निरीक्षण के स्थान पर निरीक्षण विधि को स्वीकार किया। इस विधि के द्वारा बालक के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता है। अपने निरीक्षण के आधार पर निरीक्षण-कर्ता एक विशेष रिपोर्ट तैयार करता है और उसका विश्लेषण कर बालक के व्यवहार के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। निरीक्षण विधि का वस्तुनिष्ठ स्वरूप प्रदान करने के लिए बालक के व्यवहार का विभिन्न समय और परिस्थिति के अनुसार निरीक्षण किया जाता है। कई निरीक्षकों द्वारा एक साथ मिलकर बालक के व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है जिसके कारण इस विधि को

वस्तुनिष्ठ निरीक्षण विधि (Objective observational method) कहा जाता है। इस विधि के द्वारा बालक के व्यवहार का निरीक्षण दो प्रकार की परिस्थितियों में किया जाता है जिसे नियंत्रित एवं स्वाभाविक निरीक्षण (controlled and natural observation) के नाम से जाना जाता है।

(1) Controlled observation

इसके अंतर्गत बालक के व्यवहार का निरीक्षण व्यवस्थित एवं नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है। इस विधि का उपयोग सबसे पहले जर्मनी में नवजात शिशुओं की ज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं (sensory response) के अध्ययन के लिए किया गया। मनोवैज्ञानिक Gessell (गेसेल) ने Moving picture camera के द्वारा बच्चों की प्रतिक्रियाओं का चित्र लेकर सामाजिक एवं संवेगात्मक व्यवहारों व खेलकूद की क्रियाओं का निरीक्षणात्मक अध्ययन किया।

(2) Natural observation

इस विधि के अन्तर्गत बालकों द्वारा किये गये व्यवहारों का स्वाभाविक रूप परिस्थिति में निरीक्षण किया जाता है। अर्थात इसमें वैसे व्यवहारों का निरीक्षण सम्मिलित होता है, जो प्राकृतिक रूप से वास्तविक परिस्थिति में घटित होते हैं। Crow and Crow के अनुसार स्वाभाविक निरीक्षण का मतलब - माता-पिता तथा दूसरे प्रौढ़ व्यक्तियों द्वारा बालक की दिन-प्रतिदिन की चेष्टाओं एवं क्रिया-कलापों पर ध्यान देना है। जिसमें बालक द्वारा किये जाने वाले व्यवहार जैसे - परिवार, आस-पास-पड़ोस एवं खेल के मैदान, उठना-बैठना, खेलना-कूदना, हाथ-पैर हिलाना-डुलाना एवं दूसरे से की गयी बातचीत शामिल होती है। इस विधि में निरीक्षक के द्वारा बालक द्वारा किये जा रहे व्यवहार एवं क्रियाओं को रोका नहीं जाता है। वह बालक का व्यवहार जैसा व जिस रूप में देखता है उसी के अनुरूप रिपोर्ट तैयार करता है।

उपर्युक्त के अलावा भी आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा निरीक्षण के अध्ययन की सुविधा एवं सरलता के लिए दो प्रकार की और परिस्थिति का वर्णन किया गया है जिसे Participant and non-participant (सहभागी एवं असहभागी) निरीक्षण के नाम से जाना जाता है।

(1) Participant observation → इस विधि के अंतर्गत निरीक्षण कर्ता बालक के जिन व्यवहारों का निरीक्षण करता है उनमें participan

करता है। यानि निरीक्षणकर्ता बालकों के कार्यों को उनके साथ मिलकर करता है और साथ ही साथ उनके व्यवहार का प्रेक्षण भी करता है। जैसे बालकों के खेल संबंधी कौशलों का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक द्वारा बालकों के साथ मिलकर खेलना सहभागी निरीक्षण विधि का उदाहरण होगा।

Non-Participant observation → इस विधि में निरीक्षण कर्ता बच्चों के जिस व्यवहारों का निरीक्षण करता है उनमें सहभागिता नहीं निभाता है बल्कि दूर से ही निरीक्षण करके उनके द्वारा किये जा रहे व्यवहारों का अध्ययन करता है। इस प्रकार का निरीक्षण शैक्षिक, सामाजिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में प्रायः प्रयुक्त होता है।

Sub Method of control and Informal observation method

मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में अनेक प्रकार की विधियों की अवधारणा विकसित की गयी है जिन्हें स्वाभाविक एवं नियंत्रित विधि की उप-विधियों के नाम से जाना जाता है। जिनकी व्याख्या निम्नांकित इस प्रकार है —

(1) Situational analysis (परिस्थिति विश्लेषण) → इस विधि को व्याख्या अनेक प्रकार की परिस्थितियों एवं वातावरण में रहने वाली बच्चों (बालक) के व्यवहार का निरीक्षण करके किया जाता है। जिनसे प्राप्त data (प्रदत्तों) के आधार पर बालक के व्यवहार के संदर्भ में निष्कर्ष निकाला जाता है। ऐसी परिस्थितियाँ बालक के परिवार, पास-पड़ोस, विद्यालय, मित्र मंडली एवं खेल-कूद के मैदान आदि से संबंधित होती है जिसमें बालक का व्यवहार घटित होता है।

(2) Time-Sampling (समय-प्रतिदर्शन) → इस विधि के अंतर्गत एक निश्चित एवं निर्धारित समय के अन्तर्गत बालक द्वारा किये गये व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए अन्य बालकों द्वारा किये गये व्यवहारों का निरीक्षण करके तुलनात्मक रूप से सामान्यीकरण (generalization) किया जाता है। उदाहरण के लिए कार्य की अवधि, खेलने की अवधि निर्धारित करके इसके अन्तर्गत घटित बालक के व्यवहार का निरीक्षण करना।

(3) Community Survey (समुदाय सर्वेक्षण) → इस विधि के द्वारा जैसे किसी बालक के चरित्र, आचरण एवं व्यक्तित्व का अध्ययन करना है

तो उस समाज एवं समुदाय तथा मुहल्ले में रहने वाले दूसरे बालकों के चरित्र, आचरण एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक रूप से निरीक्षण किया जाता है जिसमें बालक रहता है। इसलिए इस विधि को तुलनात्मक विधि भी कहा जाता है। इस विधि के द्वारा यह पता चलता है कि बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर किसका प्रभाव पड़ता है।

(4) Moving picture camera method (चलचित्र विधि) → इस विधि का प्रयोग मनोवैज्ञानिक Gessell (गेसेल) द्वारा बालकों के व्यवहारों के निरीक्षण के लिए सर्वप्रथम किया गया। इसमें बच्चों की अभिव्यक्तियों एवं अन्तः क्रियाओं (interaction) के चित्र लिये जाते हैं जिसके आधार पर बच्चों द्वारा किये गये व्यवहारों की व्याख्या की जाती है।

अतः उपर्युक्त विधियों के वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षण विधि के अन्तर्गत बालक द्वारा किये गये व्यवहारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष (Direct-indirect) रूप से निरीक्षण करके व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। जिसमें स्वाभाविक प्रेक्षण अथवा परिस्थिति विश्लेषण विधि सबसे महत्वपूर्ण है। इस विधि की प्रमुख विशेषता यह है कि बच्चों के व्यवहारों के अध्ययन में बिना किसी प्रकार के manipulation (जोड़-तोड़) किये ही उनका वास्तविक घटित स्वरूप में ही अध्ययन किया जाता है। इस विधि का प्रयोग करके मनोवैज्ञानिक (जोन्स एवं जोन्स) Jones and Jones, 1920 ने यह स्पष्ट किया कि बच्चों में भय नामक संवेग जन्मजात न होकर अर्जित (acquired) प्रकार का होता है।

Merits of observation method

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निरीक्षण विधि में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं जो इस प्रकार हैं —

(I) इस विधि से व्यवहार का objective (वस्तुनिष्ठ) एवं impersonal (अवैयक्तिक) निरीक्षण होता है।

(II) इस विधि का क्षेत्र व्यापक है। जिससे इसका प्रयोग छोटे आयु के बच्चों, व्यस्कों, वृद्धों, असामान्य व्यक्तियों, विकलांगों एवं पशुओं पर किया जा सकता है।

(III) इस विधि द्वारा एक ही समय में बहुत से व्यक्तियों का निरीक्षण किया जा सकता है।

(IV) इस विधि से प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विवेचन एवम् विश्लेषण सरल होता है।

(V) इस विधि से प्राप्त परिणाम विश्वसनीय एवं प्रमाणित होते हैं।

जिससे इसका आसानी से सामान्यीकरण किया जा सकता है।

Demerits of obsesational method

उपर्युक्त विशेषताओं के अलावा निरीक्षण विधि की निम्नलिखित कमियाँ एवम् दोष भी पाये जाते हैं जो निम्नांकित हैं:—

(i) इस विधि में गोचरों की भौतिक विशेषताओं के कारण उस गोचर या घटना में विकृति उत्पन्न हो जाती है।

(ii) इस विधि में निरीक्षणकर्ता की attitudes, Needs एवं पूर्वाग्रहों का प्रभाव पाया जाता है। जिसके कारण इस विधि का निरीक्षणीय व्यवहार वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ हो जाता है।

(iii) इस विधि से प्राप्त परिणामों में उचित कार्यकारण संबंध की कमी होती है।

(iv) इस विधि के द्वारा बालक या अन्य व्यक्तियों या पशुओं की मानसिक क्रियाओं की जानकारी नहीं हो पाती।

(v) व्यवहार का निरीक्षण करने में प्रयुक्त उपकरणों से प्रयोज्य के व्यवहार में कृत्रिमता आ जाती है।

(vi) इस विधि द्वारा किसी एक तथ्य का निरीक्षण किसी कारणवश न हो पाये तो पुनः उस तथ्य या घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो पाती है।

उपर्युक्त इन कमियों के होते हुए भी निरीक्षण विधि बालकों के व्यवहार संगतता (behaviour consistency) का अध्ययन करने की सबसे महत्त्वपूर्ण विधि है।